248

254 253 249

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Volume VII, Issue 2

ISSN : 2454-2415

February, 2019

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE KNOWLEDGE CONCEPT

www.ijikc.co.in

IJIKC

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SONHIRA PUBLICATION

International Journal of Innovative Knowledge Concepts

Editor
Pramila M. Jamdade

Language: English

Published by
Sonhira Publication,
204, Om, ChandranganSwaroop Society,
Ambegaon Bk., Near Sinhgad Institute, Ambegaon,
Pune- 411046

Copyrights: Editors 2019
All rights reserved

ISSN: 2454-2415

Volume-VII, Issue-2 February, 2019

Available at www.ijikc.co.in

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Sr.No.	Article Name	Author Name	Page No.
17.	Oral Tradition and Writing History: A Case Study of Kathivanur Veeran Thottam	Nimisha P	89-93
18.	Microscopic Analysis of Natural and Reinforce Bar Of Phoenix Sylvestris	R.S. Chouhan, M.S.Chouhan B.D. Shrivastava A. Mishra S. Phadke	94-97
19.	Caring of Tuberculosis Patients: A Study of Psychosocial Factors	Choudhary. G.N. Ahmed.A	98-104
20	Signs of Nature: Traditional Use of Bio-indicators in Agriculture and for Predicting Weather among the Sonowal Kachari tribe of Assam, India	Ripunjoy Sonowal	105-113
21	Comparison of hydrolases and oxidoreductases of two major folivorous Pests, Buzura suppressaria and Eterusia magnifica of Tea from Darjeeling Foothills and surrounding areas	Mayukh Sarker	114-120
22	A Study on Crowd Funding and Its Regulations in India	Brindha.N	121-123
23	Tech-Enabled Learner Support Services in ODL: A Study of Awareness among Prospective Teachers	Gulfeshan Naaz H. Khatija Begum	124-128
24.	Fault Criteria at Design stage with Cohesion Metrics	Brijesh Kumar Bhardwaj	129-131
25.	Open Educational Resources: Awareness among Prospective Teachers of Indian Central Universities	Ameen Ansari, H. Khatija Begum	132-137
26.	Television Viewing and Audience Attitudes on Gender Traits	Beulah Rachel Rajarathnamani	138-140
27.	Postural Impairments in Primi-para Women after One Year of Delivery	Sandeep Babasaheb Shinde, Asavari Jeevankumar Gaikwad	141-146
28.	Effect of psycho-education on Knowledge regarding cirrhosis of liver among patients with alcoholic liver cirrhosis	B.Venkatesan T. V Ramakrishanan G.Vijayalakshmi S.J. Nalini	147-150
29.	Consumer Inclination Towards M-Wallets: A study of Delhi	Diksha Goel	151-157
30.	Ecoconsciousness in A. K. Ramanujan's Poetry	Balkrishna Magade	158-161
31.	Victims of Race, Class and Gender: Women in Toni Morrison's The Bluest Eye	Hariom Singh	162-166
32.	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रगतिवादी चेतना	सुधीर गणेशराव वाघ	167-171
33.	वैश्वीकरण के दौर में संगीत	स्वाति शर्मा	172-174
34.	'जात आणि मतदान वर्तन : विशेष संदर्भ उत्तर प्रदेश व महाराष्ट्रातील चर्मकार समाज'	गजेंद्र दिलीप आगवाने	175-179
35.	नरहर कुरूंदकरांचे सामाजिक लेखन: एक ऐतिहासिक अभ्यास	क्षिरसागर बी. एस.	180-183
36.	मराठी भाषेची जडणघडण, संवर्धन व उपयोगिता	ईश्वर सोमनाथे	184-189
37.	Problems in Biomedical Medical Ethics: A Philosophical Reflection	Md. Akramul Haque	190-194
38	A Study to Assess the Effectiveness of Self Instructional Module on the Practices of Staff Nurses Regarding Administration of IV Injection through Existing IV Port In Paediatric Ward of Selected Hospitals in Pune	Sreelekha Rajesh	195-201

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

ISSN : 2454-2415 Vol. 7, Issue 2, February, 2019

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रगतिवादी चेतना

सुधीर गणेशराव वाघ
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली. महाराष्ट्र
भ्रमणध्वनि–9850203878

सार :
छायावादोत्तार काव्य के बाद प्रगतिवादी आंदोलन के प्रमुख कवि केदारनाथ अग्रवाल है। केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी साहित्य के प्रगतीवादी धारा के महत्वपूर्ण कवि माने जाते है। हिन्दी साहित्य में समाजवादी विचारधारा और सर्वहारा की चेतना से अनुप्रेरित केदारनाथ अग्रवाल प्रेम और सौंदर्य के अनुपम कवि थे, श्रमिकों के पक्ष में उन्होंने कई रचनाएं की। काव्य की प्रारम्भिक प्रेरणा उन्हें प्रेम से मिली । प्रेरणा के अतिरिक्त प्रेम उनके काव्य की शोभा भी रहा है। प्रेम के कारण उनके काव्य में नई दीप्ति आई। आगे चलकर उनकी यथार्थवादी दृष्टि ने तत्कालीन समश्या को काव्य में स्थान दिया। उनके जीवन का एक छौर प्रकृति से बधा है तो दूसरा समाज से।

प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में विद्रोह का स्वर व्यक्त हुआ है। उन्होंने अपने आप को जनवादी कवि कहा है। कांन्ति के माध्यम से शोषण का अंत कर नया युग लाने का सपना उन्होंने देखा है। साम्यवादी विचार के कारण उन्होंने पूंजिपतियों और जनविरोधी शासकों के प्रति विद्रोह के भाव व्यक्त किये। प्रगतिवादी कवियों ने जनता पर, मामूली व्यक्ति पर लिखने का निश्चय किया। इस युग की अधिकांश रचनाएँ इस वर्ग के एक अंश विशेष यथा– दलित–शोषित, मजदूर वर्ग पर ही अधिक लिखी गयी।

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं के केंद्र में मेहनतकश आदमी है। यह आदमी अधिक महत्वाकांक्षी नहीं है। उसे स्वर्ग की कामना नहीं है। उसे स्वर्ग के सुखों की लालसा भी नहीं है। उसे अपनी मनो भूमि और उसमें व्याप्त मानव जीवन के आनंद से ही संतोष है। इसलिए केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मानव परलोक की बजाय इसी लोग को और ईश्वर की जगह खुद को ही प्रतिष्ठित करना चाहता है।

मनुष्य प्रकृति के बिना नहीं रह सकता है। केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति आकृष्ट करती है। नदी, फूल, हवा, चिड़िया केदारनाथ अग्रवाल को जिस किसी ने अपनी और बुलाया उनकी कविता अपना पूरा जीवन जीने वही चली गई। कवि ने 'बसंती हवा' को एक चंचल, स्वतंत्र, चुलबुली किशोरी बनाया है, तो कभी बोगनबेलिया को अपनी यादों में जोड़ा है। प्रकृति उनके यहां स्वभाविक रूप में दिखाई देती है। जीवन मुक्त होने की अदम्य जिजीविषा की एक शक्ति के रूप में दिखाई देती है। उनके काव्य संसार में हवा और धूप के साथ–साथ नदियों का एक पूरा जीवंत संसार दिखाई पड़ेगा।

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में काव्य संवेदना और शिल्प का सामंजस्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अतः कहा जा सकता है कि कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल बेहद संतुलित हैं। श्रम और श्रमिकों पर लिखते हुए उनकी कविता वामपंथी विचारधारा में दबकर केवल नारेबाजी का साधन नहीं होती। उनकी कविता में कई बार पहले की द्विवेदी युगीन और छायावादी समय की कविता का विकसित रूप दिखाई पड़ता है, फिर भी वे कविताएं पहले की काव्यधारा का विस्तार नहीं लग कर एक अलग पहचान वाली दिखाई पड़ती है। उनके जीवन का एक छौर प्रकृति से बधा है तो दूसरा समाज से। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अन्याय और अत्याचार का विरोध किया है और मनुष्य की और विजय संघर्ष की गाथा रची है। स्वच्छंद, स्वतंत्र प्रेम की बजाय उनकी कविताओं में दाम्पत्य का प्रेम अच्छे तरीके से दिखाया गया है।

कीवर्ड : केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ अग्रवाल की कविता, प्रगतिवादी चेतना

छायावादी काव्य के बाद प्रगतिवादी आंदोलन के प्रमुख कवि केदारनाथ अग्रवाल है। केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी साहित्य के प्रगतीवादी धारा के महत्वपूर्ण कवि माने जाते है। हिन्दी साहित्य में समाजवादी विचारधारा और सर्वहारा की चेतना से अनुप्रेरित केदारनाथ अग्रवाल प्रेम और सौंदर्य के अनुपम कवि है। श्रमिकों के पक्ष में उन्होंने कई रचनाएं लिखी। "काव्य की प्रारम्भिक प्रेरणा उन्हें प्रेम से मिली। प्रेरणा के अतिरिक्त प्रेम उनके काव्य की शोभा भी रहा है। प्रेम के कारण उनके काव्य में नई दीप्ति आई।"[1] आगे चलकर उनकी यथार्थवादी दृष्टि ने तत्कालीन समश्या को काव्य में स्थान दिया।

'नींद के बादल' केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं का पहला काव्य संग्रह है,. युग की गंगा' दूसरा और तीसरा 'लोक तथा आलोक' काव्य संग्रह है। इनकी सम्पुर्ण कविताओं का एक प्रतिनिधिक संकलन 'फुल नहिं रंग बोलते है' नाम से निकला है। 'नींद के बादल' इसमें प्रणय संबंधी रचनाओं की अधिकता है। कवि देखता है प्रेम का सबसे बडा विरोध सामाजिक पक्ष है। ऐसी दशा में वह कभी तो प्रेयसी के चित्र से बातें करके सान्त्वना पाने की चेष्टा करता है, कभी स्वप्न मिलन सें संतोष। वे अपनी भावनाओं को कविता में कहते है–

"हम दोनो का प्यार रहे!
जिस दूर्वा पर हम तुम लेटे
कोमल हरित उदार रहें।
रजनि की आखों में जागृति
ईश्वर साक्षीकार रहे।
तरु में प्रेम–विकार, लता में
पुलक वासना भार रहे।
हम तुम दोनों को मद–विहल
चुम्बन का अधिकार रहे!"[2]

प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में विद्रोह का स्वर व्यक्त हुआ है। उन्होंने अपने आप को जनवादी कवि कहा है। क्रांन्ति के माध्यम से शोषण का अंत कर नया युग लाने का सपना उन्होंने देखा है। साम्यवादी विचार के कारण उन्होंने पूंजिपतियों और जनविरोधी शासकों के प्रति विद्रोह के भाव व्यक्त किये। "प्रगतिवादी कवियों ने जनता पर, मामूली व्यक्ति पर लिखने का निश्चय किया। इस युग की अधिकांश रचनाएँ इस वर्ग के एक अंश विशेष यथा– दलित–शोषित, मजदूर वर्ग पर ही अधिक लिखी गयी।"[3]

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

ISSN : 2454-2415 Vol. 7, Issue 2, February, 2019

श्रमिकों का जीवन–संघर्ष

मजदूरों के साथ उन्होंने विशेष रुप से किसानों के ग्रामीण जीवन के दयनीय दशा के अनेक दृश्यों के यथार्थ चित्र अंकित किये। कविता में श्रम के सौन्दर्य की जो परंपरा शुरू हुई उसका पूर्ण विकास हम केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में देख सकते हैं।

एक हथौड़े वाला घर में और हुआ!
हाथी सा बलवान,
जहाजी हाथों वालों और हुआ।

श्रम करना आदमी के लिए अपनी नियति बदलने का उद्म होता है इसलिए यह निजी न होकर एक सामाजिक कर्म बन जाता है। कवि ने इस भावना को बखूबी पकड़ा है। हथौड़ा उनका प्रिय प्रतीक है, जो उनकी एक कविता में उपस्थित है–

मार हथोड़ा,
कर–कर चोट,
लोह और पसीने से ही,
बंधन की दीवारें तोड़

कवि केदारनाथ अग्रवाल बांदा मे वकालत करते थे। उनका गांव जहा था उससे कानपुर शहर बहुत दूर नहीं था। यही शहर उनकी कर्मभूमि भी था। न्याय की बिकाऊ दशा देखकर इसी जगह इसी पेशे से उनकी आस्था उठ गई। उनका शुरुआती रुझान कांग्रेसी था। आगे चलकर मार्कसवाद ने केदारनाथ अग्रवाल के जीवन दर्शन को प्रभावित किया।

उस समय कार्लमाक्स के साम्यवाद की चर्चा बडे जोर पर थी। मार्क्सवाद में 'उपभोग और उत्पादन' दो बड़े महत्व के शब्द हैं यह दोनों एक दूसरे से गहरे संबंध है। उत्पादन होगा तभी उपभोग भी होगा उपभोग की निरंतरता ही उत्पादन की दिशा निर्धारित करती है और उत्पादन ही उपभोग की सीमा तय करता है। वह आसानी की प्रक्रिया है जबकि उत्पादन बेहद कठिन और श्रम साध्य मार्क्सवाद इन उसी को व्यस्क मनुष्य मानता है, जो उत्पादन करने में सक्षम हो। इससे पहले ही पहले का इंसान से शुभ होता है उत्पादक होकर ही वह संपूर्ण मनुष्य का दर्जा हासिल कर पाता है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता उत्पादक होने की स्थिति की कविता है। श्रमिक होने और पूर्ण मनुष्य बनने का काफी है। श्रमिकों की श्रमशीलता की दुहाई देने के साथ–साथ उन्होंने मजदूरों के घनघोर शोषण और कड़ी मेहनत के बावजूद भूखे रहे जाने की पीड़ा को भी शब्द दिए–

रोटियों की गोल मुखड़े मोहते हैं
स्वप्र भष्मीभूत होकर सो गए हैं
कल्पना के पंख काटे जा चुके हैं
गीत के अंगूर खट्टे हो गए हैं।

अधिकांश औद्योगिक नगरों की तरह कानपुर में भी मजदूर का भरपूर शोषण होता था। वह सारे दृश्य जब केदारनाथ अग्रवाल की आंखों से गुजर रहे थे। केदारनाथ अग्रवाल ने श्रमिकों के जीवन पर कविताऐं लिखी है। उनकी कविता में अपरंपरागत सौंदर्य है जो श्रम और श्रमिक समाज की जरूरतों, जीवन–संघर्ष और प्राथमिकताओं से निकलती है।

रोकर हाथ जोड़कर,
पांच पूज कर,
दया भीख से,
नहीं कमाते अपनी रोटी
वह दिन भर,
मेहनत करते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में शोषित श्रमिक केवल पुरुष ही नही है, स्त्रियां भी हैं जो जांत पीसती हैं सूखा आटा फॉकती हैं और अपनों को फकाती है। उनके काव्य संसार में दुःखी स्त्रियों के मार्मिक चित्र मौजूद हैं। एक चरित्र है – रनिया।

"रनिया मेरी देस बहन है
अति गरीब है – अति गरीब है।
मैं रनिया का देस बंधू हूँ,

रानिय एक मजदूर की वेटी है। घास काटने वाली लेकिन रनिया को देखने वाली नज़र पुरुष सौदागर की छलिया नज़र है।

"रनिया अब तक जन्मान्तर से
ज्यों की त्यों पूरी भूखी है
मैं जन्मांतर से वैसा ही
ज्यों की त्यों पूरी खाता हूँ।"

एक स्त्री की यातना पर केंद्रित कविता में उस मार्क्सवादी चेतना का उपयोग दिखाई पड़ता है, जो इस बात की तरफ ध्यान आकृष्ट करती है कि किसी समाज की दुर्व्यवस्था का आकलन उस समाज की स्त्रियों की दशा दुर्दशा को देखकर ही किया जा सकता है। केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में 'भुल्लों अहिरिन' और 'सीता मैया' जैसी कविताएँ भी हैं। राम और सीता के जैसे महान चरित्र से समाज सब परिचित हैं। लेकिन उनके आदर्शों को लेकर चलने वाला कोई दिखई नहीं पडता।

मानव की प्रतिष्ठा

कविता और कला दोनों जगह धरती और किसान अपनी मुश्किलों के साथ आते हैं। भारत के किसान सामंतवाद और साम्राज्यवाद दोनों से एक साथ लड़ रहे थे। हिंदी में यह बात प्रेमचंद, बेनीपुरी, सहजानंद सरस्वती, नागार्जुन और रेणु जैसे लोग समझ रहे थे। केदारनाथ अग्रवाल कहते है कि इस धरती पर पहला अधिकार जमींदार का नहीं किसान का है–

"नहीं कृष्ण की;
नहीं राम की,
नहीं भीम, सहदेव, नकुल की,
नहीं पार्थ की,
नहीं राव की, नहीं रंक की,
नहीं किसी की, नहीं किसी की,
धरती है केवल किसान की।"

प्रगतिशील कवि जब भी किसी सौंदर्य का वर्णन करते हैं तो शुरुआत मानव सौंदर से करते हैं मानो दृष्टि तभी सुंदर होगी जब उसकी बुद्धि सुंदरता का ज्ञान प्राप्त कराएगी। मानवीय बौद्ध के बिना सौंदर्य बोध की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN : 2454-2415 Vol. 7. Issue 2. February. 2019

केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी प्राकृतिपरक कविताओं में प्रकृति की प्रतिष्ठा मनुष्य से जोड़कर भी की है। और प्राकृतिक घटनाओं से जुड़ा मनुष्य भी उनकी कविताओं में है –

आग लेने गया है,
पेड का हाथ आदमी के लिए
टूटी डाल नहीं टूटी
छोटे हाथ
सवेरा होते
लाल कमल से खिल उठते हैं
करनी करने को उत्सुक है
.... मिट्टी का सोना करते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं के केंद्र में मेहनतकश आदमी है। यह आदमी अधिक महत्वाकांक्षी नहीं है। उसे स्वर्ग की कामना नहीं है। उसे स्वर्ग के सुखों की लालसा भी नहीं है। उसे अपनी मनो भूमि और उसमें व्याप्त मानव जीवन के आनंद से ही संतोष है। इसलिए केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मानव परलोक की बजाय इसी लोग को और ईश्वर की जगह खुद को ही प्रतिष्ठित करना चाहता है।

ना चाहिए मुझे
एरावत की सवारी
ना चाहिए मुझे, इंद्रासन
ना चाहिए मुझे
परिजात
बस
अब
बहुत काफी है मुझे
मेरे लिए लोकतंत्र की जमीन
जो हो रहा है
दिनों दिन
मानवता से हसीन

समाज का आधार मानव ही है। इस बात को केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविताओं में भली भाति व्यक्त किया है। आदमी का हर रूप कवि को प्यारा है। पीड़ित मानव के रूप में कभी अधिक संवेदनशील दिखाई पड़ते हैं। उनका मानना है कि मानव मूल्य किसी भी व्यापक परिवेश में बनते और पनपते हैं। देश समाज और राष्ट्र की सीमा से परे। मानव जीवन पर्यंत काम करता रहता है। वह अपने श्रम से कमाई हुई चीजों का स्वामी होता है मानव का कष्ट तभी दूर होता है जब वह श्रम करने लगता है। मेहनंती मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

हमारे हाथों में बल है

कि हम बंजर को तोड़ेंगे

बिना तोड़े ना छोड़ेंगे

यह बंजरता जमीन की भी है और समाज की भी है जिसे केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मानव तोड़ने की लालसा रखता है।

प्रकृति का चित्रण

मनुष्य प्रकृति के बिना नहीं रह सकता है। केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति आकृष्ट करती है। नदी, फूल, हवा, चिड़िया केदारनाथ अग्रवाल को जिस किसी ने अपनी ओर बुलाया उनकी कविता अपना पूरा जीवन जीने वही चली गई। कवि ने 'बसंती हवा' को एक चंचल, स्वतंत्र, चुलबुली किशोरी बताया है, तो कभी उनको अपनी यादों में जोड़ा है। प्रकृति उनके यहां स्वभाविक रूप में दिखाई देती है। जीवन मुक्त होने की अदम्य जिजीविषा की एक शक्ति के रूप में दिखाई देती है।

कसम रुप की है, कसम प्रेम की है
कसम इस –हदय की सुनो बात मेरी–
अनोखी हवा हूं, बडी बावली हूं।
बडी मस्त मौला नहीं कुछ फिकर है,
बडी ही निडर हूं जिधर चाहती हूं,
उधर घूमती हूं, मुसाफीर अजब हूं।
न घर बार मेरा, न उद्येश्य मेरा,
न इच्छा किसी की न आशा किसी की,
न प्रेमी न दुश्मन,
जिधर चाहती हूं उधर घुमती हूं,
हवा हूं, हवा मैं, बसंत की हवा हूं।

प्रकृति में धुप का महत्व है। प्रकृति की हसीं कायम रखने के लिए धुंप का कार्य महत्वपुर्ण है। एक किसान ही प्रकृति में धूप के महत्व को समझ सकता है। केदारनाथ अग्रवाल ने धूप पर बहुत सी कविताएं की हैं–

धूप बहुत खाई है मैंने
मार बहुत खाई है मैंने
धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है।

उन्होंने अपनी प्रकृति की कविताओं को अत्यंत रोचक और मानवीय रूप दिया है। मानवीकरण की एक कविता में लिखा है–

धूप धरा पर उतरी
जैसे भी शिव के जटा जूट पर
नभ से गंगा उतरी उतरी

बसंत की हवा ने चमचमाती हुई धूप जो हसने का अवसर दिया है, छायावाद का कवि इस और देख नहीं पाया है।

धूप चमकती है चांदी की साडी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों की ध्वनि से लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियां गले मिलती है।

और यह भी प्रकृति में निकल कर कभी उसमें को नहीं जाते बल्कि खुद को ही फिर से एक नए ढंग से ढूंढ लेते हैं।

लुढकता रहा हूं मैं अंदर आकाश की सलवटों में
मार्ग का तल था एक स्वप्न के समीप
तो भी आसमान के चौडे मुख रो
मैनें खरोच ली अपनी आंखें बाहर देखने के लिए

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN : 2454-2415 Vol. 7, Issue 2, February, 2019

वाष्प के मृदुल उरोजों के पार
और मैंने सुन लिए बिगुल बजते
भौतिक स्वरों के

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य संसार में हवा और धूप के साथ–साथ नदियों का एक पूरा जीवंत संसार दिखाई पड़ेगा। उनकी कविता 'केन किनारे' की पहली पंक्ति ही देखिए –

"सोने का रवि डूब गया है केन किनारे
नीले जल में खोज रहे हैं नन्हें तारे ।"

कवि को जीवन से निराश होकर फिर से जीने की आशा प्रकृति से मिलती है। तभी तो धूप को एक फुदकने वाला खरगोश बताते हुए उन्होनें लिखा है–

धूप नही यह
बैठा है खरगोश पलंग पर
उजला, रोएंदार, मुलायम इसको छूकर
ज्ञान हो गया जीने का
फिर से मुझको ।

मकर संक्रान्ति से लेकर होली तक मौसम का जो बदलाव गाँव में था। उसमें 'पूस की रात' के (जाड़े के आतंक) आतंक से राहत का अहसास होता था। हर बार जाड़ा गाँव में नया संचार लेकर आता था। वसंत की हवा से गाँव से लेकर खेत तक हँसी की जो लहर है वह इस कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ती है –

"हँसे लहलहाते हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती भरी धूप प्यारी,
बसंती हवा में हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ हवा मैं बसंती हवा हूँ।"

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य संसार में हवा और धूप के साथ–साथ नदियों का एक पूरा जीवंत संसार दिखाई पड़ेगा। केन नदी के आसपास जो संसार है, उसमें टुनटुनिया पर्वत और बमभोला का मंदिर सब इस बात के प्रतीक हैं। दुनिया का हर कारोबार नदी के बगैर अधूरा है। सभ्यता और प्रकृति दोनों के केंद्र में नदियाँ हैं।इस धरती ने सभ्यता के इतिहास में जितने दुख झेले हैं उसकी सलवटें धरती के मानचित्र पर मौजूद हैं। इसे गुलाम बनाने वाले लुटेरों, सामंतों और साम्राज्यवादियों से वीरों ने समय पर लोहा लिया है। धरती गुलाम हुई लेकिन नदियों को गुलाम नहीं बनाया जा सका। केदार जी के लिए नदियाँ स्वतंत्रता की शाश्वत प्रतीक हैं–

"वीरों ने जब मुक्त मही को स्वीय बनाया
सामंतों ने प्रिय धरती पर त्रास बसाया,
केन नदी को तब भी कोई जीत न पाया"

नदियों का अस्तित्व आज जब खतरे में है तब ये कविताएँ नदियों के पर्यावरण और अस्तित्व की रक्षा के अभियान में एक राष्ट्रीय गान बन सकती है। गंगा, गोदावरी की पवित्रता असंदिग्ध है। बड़ी नदियों की चर्चा करने के क्रम में हम 'केन' जैसी छोटी नदियों पर बात नहीं करते लेकिन तब हम भूल जाते हैं कि हर बड़ी नदी छोटी–छोटी नदियों का समुच्चय ही तो है। और ये नदियाँ परमारथ के कारने दूसरों के लिए समर्पित हो जाने का भी तो सबसे बड़ा प्रमाण हैं –

"केन नदी कहती है मेरा पानी पी लो –
'नीलकंठ' से मेरे बांदावासी जी लो।"

पूरी दुनिया के नदियों के बारे में मैं तो विश्वास पूर्वक नहीं कह सकता पर अपने देश की शायद ही कोई नदी हो जिसके साथ कोई कथा न जुड़ी हुई हो। नदियाँ सिर्फ जीवन ही नहीं देती बल्कि उनका अपना भी एक जीवन होता है। वे हमारी तरह ही प्यार करती हैं और रूठती भी हैं। 'सोन' और 'नर्मदा' की कथा से तो हम परिचित ही हैं। केदारनाथ अग्रवाल की एक कविता है–

"आज नदी बिलकुल उदास थी
सोई थी अपने पानी में,
उसके दर्पण पर
बादल का वस्त्र पड़ा था।
मैं ने उसको नहीं जगाया
दबे पाँव घर वापस आया।"04

कवि के मन में यह अपराध बोध था कि स्नान करते समय गंगा में पैर पड़ गए। यहाँ कवि नदी में बिना पैर रखे दबे–पाँव वापस आ जाता है। नदियों से जो मनुष्य का संबंध है उसकी रागात्मकता ने एक–दूसरे की लम्बे समय तक रक्षा की है।

कविता के स्वरूप में और प्रयोजन के बारे में केदारनाथ अग्रवाल का कहना है कि कविता में यदि नदी, पहाड़, वन, धूप, छाव, चांद, सितारे और ऋतुपरिवर्तन के दृश्य न हो और उसमें लौकिक वस्तुओं के रूप रंगों का बिम्ब न हो तो बेचारा पाठक कैसे अपने प्रांत, प्रदेश और देश को देख सकता है और कैसे उसे प्यार कर सकता है? केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रकृति चित्रण आया है वह मानव मन पर सहज स्वाभाविक सीधा असर डालने वाला और बार–बार जीवन की याद दिलाने वाला है।

काव्य शिल्प

प्रगतिवादी कविता में मुक्तक छंद का प्रयोग हुआ है। इस प्रक्रिया में सिर्फ और संवेदना की दूरी खत्म हो गई है। काव्य संवेदना के अभाव में सिर्फ अधूरा है और फिर से मौलिकता के बिना कविता अपूर्व हो जाएगी ऐसे में केदारनाथ अग्रवाल की कविता में काव्य संवेदना और शिल्प का सामंजस्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

केदारनाथ अग्रवाल बांदा बुंदेलखंड के थे। उन्होंने उनकी कविता में लोक भाषा का खुलकर प्रयोग किया–

जल्दी–जल्दी हांक किशनवा!
बैलों को हुरियाये जा
युग की पैनी लौह कुसी को
भुई मे खूब गढ़ाए जा।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

COLLEGE HINGOLI

ISSN : 2454-2415 Vol. 7. Issue 2. February, 2019

केदारनाथ अग्रवाल ने विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जो आम जनता की समाझ के लिए सहज है।

अतः कहा जा सकता है कि कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल बेहद संतुलित हैं। श्रम और श्रमिकों पर लिखते हुए उनकी कविता वामपंथी विचारधारा में दबकर केवल नारेबाजी का साधन नहीं होती। उनकी कविता में कई बार पहले की द्विवेदी युगीन और छायावादी समय की कविता का विकसित रूप दिखाई पड़ता है, फिर भी वे कविताएं पहले की काव्यधारा का विस्तार नहीं लग कर एक अलग पहचान वाली दिखाई पड़ती है। उनके जीवन का एक छोर प्रकृति से बधा है तो दूसरा समाज से। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अन्याय और अत्याचार का विरोध किया है और मनुष्य की और विजय संघर्ष की गाथा रची है। स्वच्छंद, स्वतंत्र प्रेम की बजाय उनकी कविताओं में दाम्पत्य का प्रेम अच्छे तरीके से दिखाया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ–

1. नयी कविता नये कवि विश्वम्भर'मानव' लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद–1 व्दितीय संस्करन 1968 पृष्ठ– 149
2. वही पृष्ठ–146–148
3. समकालिन हिन्दी कविता में आम आदमी– मृदुल जोशी क्लासीकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, व्दितीय संस्करन 2001 पृष्ठ– 27
4. नयी कविता नये कवि विश्वम्भर'मानव' लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद–1 व्दितीय संस्करन 1968 पृष्ठ– 160

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

T.C.
Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)